UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 1 सावित्री (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

प्राचीनकाल में हमारे देश के मद्र देश पर अश्वपति नाम के एक राजा राज्य करते थे। इनकी कन्या का नाम सावित्री था। सावित्री बहुत सुन्दर और गुणवती थी। उसके पिता चाहते थे कि सावित्री को बहुत अच्छा पति मिले। एक बार सावित्री तीर्थयात्रा को गई। वन में उसका सत्यवान से परिचय हुआ। सत्यवान के पिता किसी समय शाल्व देश के राजा थे। उस समय वे वन में तपस्या कर रहे थे। दूसरे दिन सावित्री ने अपने पिता से सत्यवान से विवाह करने की अनुमति माँगी।

अश्वपति बड़े प्रसन्न हुए किन्तु जब उन्हें यह पता लगा कि सत्यवान की आयु अब अधिक शेष नहीं है तो वे बहुत दु:खी हुए लेकिन सावित्री अपनी बात पर डटी रही। अन्त में अश्वपति ने विवाह की अनुमति दे दी। सत्यवान और सावित्री का विवाह हो गया। एक बार वन में सत्यवान के सिर में भयंकर दर्द उठा और वह बेहोश हो गया। उसी समय यमराज सत्यवान के प्राण लेकर चल दिए। सावित्री भी उनके पीछे-पीछे चल दी। यमराज ने सावित्री को वापस भेजना चाहा किन्तु सावित्री ने यमराज का पीछा न छोड़ा। यमराज ने सावित्री को अनेक वरदान भी दिए किन्तु सावित्री फिर भी यमराज के पीछे-पीछे चलती रही।

यमराज ने सावित्री को फिर समझाया और उससे एक और वरदान माँगने को कहा। सावित्री ने कहा कि यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे यह वरदान दीजिए कि मैं पुत्रवती हो जाऊँ। यमराज ने यह वरदान भी सावित्री को दे दिया। यमराज अब फिर आगे चल दिए किन्तु सावित्री वापस नहीं लौटी। अब तो यमराज को क्रोध आ गया। उन्होंने फिर सावित्री को लौट जाने को कहा। सावित्री बोली- धर्मराज, आप मुझे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे चुके हैं और मेरे पति को आप अपने साथ लिए जा रहे हैं, तब यह कैसे हो सकता है कि मैं पुत्रवती हो जाऊँ? यमराज को अब अपनी भूल मालूम हुई। उन्होंने सत्यवान के प्राण छोड़ दिए और सत्यवान जीवित हो गया।

शिक्षा – सावित्री की तरह सच्ची लगन, आत्मविश्वास और दृढ़ विचार वाले कठिन से कठिन कार्य को भी पूर्ण करने में सफल हो जाते हैं।

https://www.evidyarthi.in/